Volume-II, No. 1, Feb -2015, pp. 108-111

सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में पुरूष एवं महिला बी.टी.सी. शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि, शिक्षक प्रभावशीलता, समायोजन का अध्ययन करना।

डा. पूनम अग्रवाल, एसोसिएट प्रोफेसर ,
डी. एस. कालिज अलीगढ उत्तर प्रदेश भारत।

मनुष्य एक 'बुद्धि–युक्त' प्राणी है। यह विरासत उसे जन्म से ही प्रकृति द्वारा प्राप्त होती है। खुले वातावरण में नेत्र खुलते ही उसे अपनी सुरक्षा का मान (अनुमान) होने लगता है। अतः वह अपनी सुरक्षा तथा सुस्थिति के लिये प्राकृतिक तत्वों द्वारा संघर्षरत हो जाता है। जैसे–जैसे उसका शारीरिक, मानसिक विकास होता जाता है, वह भावनात्मक, ज्ञानात्मक तथा सामाजिक पहलुओं में जकड़ता जाता है। होता यह है कि उसे मजबूर होकर वातावरण तथा संस्कृति के पालने में पलना पड़ता है। समयानुकूल अपने जीवन के सुखद निर्वाह के लिये वह नाना प्रकार के कर्मों को करता हुआ आगे बढ़ने की चेष्टा में लगा रहता है। ऐसे समय में ही उसे अनेक सुखद और दुखद अनुभव होते जाते हैं। यही उसे सही सीख भी देते हैं। इन्हीं सुखद और दुखद अनुभवों की सीख द्वारा मनुष्य 'सीखता' जाता है। अनेक विद्वानों ने इस प्रकार के अनुभव अथवा 'सीख' को अधिगम शब्द से सम्बोधित किया है। मनुष्य को जन्म से ही अपनी अनुकूल अथवा प्रतिकूल परिस्थितियों के अनुसार संघर्षरत रहकर कर्म करना होता है। इसी कर्म को अपने अनुकूल बनाने के लिये उसे सीखना पड़ता है। कुछ सीखना ही शिक्षा लेना है। शिक्षा से ज्ञान, अनुभव तथा कुशलता मिलती है। इसी शिक्षा से कौशलों का विकास सम्भव होता है।

समस्या कथन–सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में पुरूष एवं महिला बी.टी.सी. शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि, शिक्षक प्रभावशीलता, समायोजन का अध्ययन करना।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व –

यह कहना अतिश्योक्ति नहीं होगी कि ''भारत की नियति उसके कक्षा कक्षों में आकार ले रही है।'' यह कथन है शिक्षा आयोग 1964–66 का जो प्रथम पृष्ठ पर ही अंकित है और इस भविष्य का निर्माता शिक्षक है। हम जानते हैं कि कक्षा में शिक्षण त्रिध्रुवीय प्रक्रिया है। इन तीनों में क्रमशः छात्र, शिक्षक व शिक्षण प्रक्रिया सम्मिलित रहती है। अतः शिक्षण प्रक्रिया शिक्षक की अनुपस्थिति मे अधूरी रह जायेगी क्योंकि शिक्षा की राष्ट्रीय विकास की योजनाओं एवं कार्यक्रमों को उचित प्रकार से पूर्ण करने एवं बढ़ावा देने का कार्य शिक्षकों द्वारा किया जा रहा है। अध्यापक के व्यक्तित्त्व से जुड़ी सभी विशेषतायें तथा समस्याएं हर प्रकार से शिक्षा प्रक्रिया व शिक्षण के केन्द्र बिन्दु शिक्षार्थियों पर अपना प्रभाव डालती है। यदि अध्यापक मानसिक रूप से संतुष्ट नहीं होगा तो छात्रों के प्रति उसका दृष्टिकोण एवं व्यवहार उचित नहीं होगा। अतः किसी भी राष्ट्र की उन्नति के लिये वहाँ के छात्रों का विकास करना आवश्यक है, क्योंकि आज के यह छात्र भविष्य के नागरिक हैं।

शोध उद्देश्य :–

- अलीगढ जनपद के सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में पुरूष एवं महिला बी.टी.सी. शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि का अध्ययन करना।
- अलीगढ जनपद के सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में पुरूष एवं महिला बी.टी.सी. शिक्षकों की शिक्षक प्रभावशीलता का अध्ययन करना।
- अलीगढ जनपद के सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में पुरूष एवं महिला बी.टी.सी. शिक्षकों के समायोजन का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ : –

- अलीगढ जनपद के सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के पुरूष एवं महिला बी.टी.सी. शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- अलीगढ जनपद के सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के पुरूष एवं महिला बी.टी.सी. शिक्षकों की प्रभावशीलता में कोई सार्थक अन्तर नहीं हैं।
- अलीगढ जनपद के सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के पुरूष एवं महिला बी.टी.सी. शिक्षकों के समायोजन में कोई सार्थक नहीं है।

विधि एवं प्रक्रिया : सर्वेक्षण एवं प्रश्नावली विधि–शोधार्थी ने समस्या का सावधानीपूर्वक अध्ययन किया तथा सम्बन्धित साहित्य पर विचार करने पर निष्कर्ष निकाला कि प्रस्तुत शोध के लिए 'सर्वेक्षण विधि' का चयन उचित है। सर्वेक्षण अध्ययन मुख्यतः घटनाओं, चरों व विशेषताओं की वर्तमान स्थितियों का वर्णन करते हैं। किसी विशिष्ट मानव समुदाय, किसी संख्या, किसी परिपाटी, नीति एवं योजना की आलोचनात्मक ढंग से व्याख्या करना या इनके वर्तमान स्तर की किसी स्वीकृत मानक के साथ तुलना करके सुधार हेतु सुझाव देना सर्वेक्षण अध्ययन का उद्देश्य होता है।

जनसंख्या :–प्रस्तावित शोध के सर्वेक्षण हेतु उत्तर प्रदेश के अलीगढ जनपद के सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के

बी.टी.सी. पुरूष एवं महिला शिक्षकों को सम्मिलित किया है।

न्यादर्श :–न्यादर्श का चयन करने के लिये शोधार्थिनी ने उत्तर प्रदेश के अलीगढ जनपद के सरकारी प्राथमिक विद्यालयों को लिया है। इस अध्ययन में दत्त संकलन हेतु यादृच्छिक न्यादर्श विधि का प्रयोग किया है। न्यादर्शित सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत बी.टी. सी. तथा विशिष्ट बी.टी.सी. शिक्षकों में से शोधार्थिनी ने स्तरीकृत यादृच्छिकी न्यादर्श विधि द्वारा 100 प्रयोज्यों का चयन किया है।

अध्ययन के चर :–

प्रस्तावित अध्ययन में 2 स्वतंत्र चर हैं –

- बी.टी.सी. पुरूष शिक्षक
- बी.टी.सी. महिला शिक्षक

इस अध्ययन में 3 आश्रित चर हैं –

- कार्य संतुष्टि
- प्रभावशीलता
- समायोजन

शोध उपकरण–प्रस्तुत अध्ययन के लिये निम्न उपकरणों का प्रयोग किया है –

1. **कार्य सन्तुष्टि मापनी**–डॉ.(श्रीमती) मीरा दीक्षित
2. **अध्यापक प्रभावशीलता मापनी**–डॉ. प्रमोद कुमार तथा डॉ. डी.एन. मूथा

3. **मंगल अध्यापक समायोजन परिसूची**–डॉ.एस.के. मंगल

सांख्यिकी विधियाँ–प्रस्तावित अध्ययन में शोधार्थिनी ने मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात आदि सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया है।

शोध प्रक्रिया : शोध प्रक्रिया निम्न चरणों के अन्तर्गत पूर्ण की गयी है –

- परीक्षणों का प्रशासन
- समंकों का एकत्रीकरण
- समंकों की गणना

शोध अध्ययन का सीमांकन : –

1. प्रस्तावित अध्ययन को उत्तर प्रदेश के अलीगढ मण्डल तक सीमित रखा गया है,
2. अध्ययन में प्राथमिक स्तर के बी.टी.सी. तथा विशिष्ट बी.टी.सी. शिक्षकों को सम्मिलित किया गया है।
3. अध्ययन में उत्तर प्रदेश के परिषदीय प्राथमिक विद्यालयों को ही सम्मिलित किया गया है।
4. यह विद्यालय ग्रामीण एवं नगर क्षेत्रों से सम्बन्धित हैं।
5. प्रस्तावित अध्ययन में क्षेत्र समूहों में महिला व पुरूष शिक्षकों को सम्मिलित किया गया है।
6. प्रस्तुत शोध अध्ययन को 100 शिक्षकों तक ही सीमित रखा गया है।

आंकड़ों का विश्लेषण एवं अर्थापन :–

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में पुरूष एवं महिला बी.टी.सी. शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि, शिक्षक प्रभावशीलता, समायोजन का अध्ययन करना है। सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के बी. टी.सी. पुरूष एवं महिला शिक्षकों की कार्य संतुष्टि में अन्तर :–

परिकल्पना क्रमांक 1

अलीगढ जनपद के सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के पुरूष एवं महिला बी.टी.सी. शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

''तालिका संख्या 1 में सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के बी.टी.सी. पुरूष एवं महिला शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि से सम्बन्धित मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात प्रदर्शित किया गया है।

तालिका संख्या –1

आश्रित चर (D.V)	समूह (G)	संख्या (N)	मध्यमान (Mean)	मानक विचलन (S.D.)	मानक त्रुटि (σ_d)	क्रान्तिक अनुपात मूल्य (C.R.)
कार्य सन्तुष्टि	बी.टी.सी. पुरुष शिक्षक	100	214.28	26.179	3.266	1.84
	बी.टी.सी. महिला शिक्षक	100	208.26	19.542		

तालिका के अनुसार बी.टी.सी. पुरूष शिक्षकों का मध्यमान 214.28 व महिला शिक्षकों का मध्यमान 208.26 प्राप्त हुआ है। इससे यह स्पष्ट होता है कि पुरूषों में महिलाओं की अपेक्षा अपने कार्य के प्रति अधिक संतुष्टि होती है। दोनों समूहों का कार्य संतुष्टि के प्रति पुरूष शिक्षकों का मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 214.28 (26.179) तथा महिला शिक्षकों का मध्यमान व मानक विचनल क्रमशः 208.26 (19.542) व इन दोनों समूहों के मध्य क्रान्तिक अनुपात का मूल्य 1.84 है। जोकि दोनों स्तरों (0.05 व 0.01) पर सार्थक नहीं है।

अतः कार्य संतुष्टि के प्रति बी0टी0सी0 पुरूष शिक्षकों व बी0टी0सी0 महिला शिक्षकों की कार्य संतुष्टि में अन्तर नहीं पाया गया।

सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के बी.टी.सी. पुरूष एवं महिला शिक्षकों की शिक्षक प्रभावशीलता में अन्तर :

परिकल्पना क्रमांक : 2

अलीगढ जनपद के सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के पुरूष एवं महिला बी.टी.सी. शिक्षकों की शिक्षक प्रभावशीलता में कोई सार्थक अन्तर नहीं हैं।

तालिका संख्या 2 में सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के बी. टी.सी. शिक्षक एवं शिक्षिकाओं का शिक्षक प्रभावशीलता

से सम्बन्धित मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात को दर्शाया गया है।

तालिका संख्या – 2

आश्रित चर (D.V)	समूह (G)	संख्या (N)	मध्यमान (Mean)	मानक विचलन (S.D.)	मानक त्रुटि (σ_d)	क्रान्तिक अनुपात मूल्य (C.R.)
शिक्षक प्रभाव शीलता	बी.टी.सी. पुरुष शिक्षक	100	298.01	50.149	6.024	0.320
	बी.टी.सी. महिला शिक्षक	100	296.08	33.393		

बी.टी.सी. पुरूष शिक्षकों का शिक्षक प्रभावशीलता के प्रति मध्यमान 298.01 व बी.टी.सी. महिला शिक्षकों का शिक्षक प्रभावशीलता के प्रति मध्यमान 296.08 प्राप्त हुआ है। इससे यह स्पष्ट होता है कि पुरूष शिक्षकों में महिला शिक्षकों की अपेक्षा अधिक शिक्षक प्रभावशीलता पायी जाती है।

दोनों समूहों में शिक्षक प्रभावशीलता के प्रति बी.टी.सी. पुरूष शिक्षकों का मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 298.01 (50.149) तथा महिला शिक्षकों का मध्यमान व मानक विचलन 296.08 (33.393) प्राप्त हुआ है व इन दोनों समूहों के मध्य क्रान्तिक अनुपात का मूल्य 0.320 प्राप्त हुआ है जोकि दोनों ही स्तरों (0.05 व 0.01) पर सार्थक नहीं है।

अतः शिक्षक प्रभावशीलता के प्रति बी.टी.सी. पुरूष शिक्षकों व बी.टी.सी. महिला शिक्षकों में अन्तर नहीं पाया गया। अर्थात दोनों की कार्य संतुष्टि लगभग समान है।

सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के बी.टी.सी. पुरूष और महिला शिक्षकों के समायोजन में अन्तर :

परिकल्पना क्रमांक : 3

अलीगढ जनपद के सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के पुरूष एवं महिला बी.टी.सी. शिक्षकों के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका संख्या 3 के द्वारा सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के बी0टी0सी0 पुरूष एवं महिला शिक्षकों के समायोजन से सम्बन्धित मध्यमान, मानक विचलन व क्रान्तिक अनुपात को प्रदर्शित किया गया है।

तालिका संख्या – 3

आश्रित चर (D.V)	समूह (G)	संख्या (N)	मध्यमान (Mean)	मानक विचलन (S.D.)	मानक त्रुटि (σ_d)	क्रान्तिक अनुपात मूल्य (C.R.)
समायोजन	बी.टी.सी. पुरुष शिक्षक	100	54.21	8.65	1.17	4.86 **
	बी.टी.सी. महिला शिक्षक	100	48.52	7.89		

** 0.05 एवं 0.01 स्तर पर सार्थक

बी.टी.सी. पुरूष शिक्षकों का मध्यमान 54.21 व बी.टी.सी. महिला शिक्षकों के मध्यमान 48.52 है इससे यह स्पष्ट होता है कि पुरूषों में महिलाओं की अपेक्षा समायोजन क्षमता अधिक होती है। दोनों समूहों में समायोजन के प्रति मध्यमान और मानक विचलन क्रमशः बी.टी.सी. पुरूष शिक्षक 54.21 (8.65) बी.टी.सी. महिला शिक्षक 48. 52 (7.89) व इन दोनों समूहों के मध्य क्रान्तिक अनुपात का मूल्य 4.86 प्राप्त हुआ है। जोकि दोनों ही स्तरों (0. 05 व 0.01) पर सार्थक है।

अतः समायोजन के प्रति बी.टी.सी. पुरूष शिक्षकों व बी0टी0सी0 महिला शिक्षकों में अन्तर पाया गया है।

शोध के निष्कर्ष :–

- अलीगढ जनपद के सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के बी.टी.सी. पुरूष शिक्षकों एवं बी.टी.सी.महिला शिक्षकों की कार्य संतुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है।
- अलीगढ जनपद के सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के बी.टी.सी. पुरूष शिक्षकों एवं बी.टी.सी. महिला शिक्षकों की शिक्षक प्रभावशीलता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है।
- अलीगढ जनपद के सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के बी.टी.सी. पुरूष शिक्षकों एवं बी.टी.सी. महिला शिक्षकों के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है।

भावी शोध हेतु सुझाव

अर्थ एवं समय के दृष्टिगत रखते हुये शोधार्थिनी ने इस तथ्य का पूर्ण ज्ञान करके जिस समस्या का अध्ययन करने का प्रयास किया है वह तो एक सीमा तक पूर्ण रहा लेकिन शोध जैसे वृहद् कार्य को पूर्ण करते समय कुछ अंश अछूते रहे जाते हैं। जिसका मुख्य कारण अर्थ, समय, साधन, शारीरिक श्रम आदि हैं। प्रस्तुत अध्ययन की सीमा को ध्यान में रखते हुए निम्न नवीन शोध कार्य किये जा सकते हैं:–

- प्रस्तुत शोध अलीगढ जनपद के सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत् बी.टी.सी. पुरूष एवं महिला शिक्षकों पर किया गया है। इसे अन्य मण्डलों एवं

सभांगीय क्षेत्रों के बी.टी.सी. शिक्षकों पर भी किया जा सकता है।

- न्यादर्श का आकार कम व अधिक भी कर सकते हैं।
- प्रस्तुत अध्ययन में बी.टी.सी. पुरूष एवं महिला शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि, प्रभावशीलता एवं समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन किया है। इसी न्यादर्श पर अन्य चरों यथा व्यक्तित्व, व्यवसायिक दबाव, शिक्षण अभिवृत्ति, अभियोग्यता, रूचि, मूल्य, मानसिक स्वास्थ्य, सृजनशीलता, आत्म प्रत्यय, चिंतनशैली आदि को लेकर उनका तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
- इसी विषय पर ग्रामीण व शहरी क्षेत्र, विवाहित व अविवाहित, शैक्षिक योग्यता, विभिन्न स्तर पर शिक्षण अनुभव, आयु के आधार पर, पारिवारिक पृष्ठभूमि, आर्थिक स्तर आदि को आधार बनाकर इन्हीं चरों का अध्ययन किया जा सकता है।
- प्रस्तुत शोध कार्य सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों तक ही सीमित रहा है इन्ही चरों को लेकर, राजकीय, निजी, कान्वेन्ट, सरस्वती शिशु मन्दिर, नवोदय विद्यालयों के शिक्षकों में भी तुलना की जा सकती है।
- प्रस्तुत शोध के चरों का हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम के शिक्षकों पर तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
- माध्यमिक, उच्च माध्यमिक, महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय स्तर के शिक्षकों पर भी इन चरों का अध्ययन किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- करलिंगर, एफ0एन0 : 'फाउन्डेशन ऑफ बिहेवियरल रिसर्च', हाल्ट 1964
- लाल, आर0बी0 एवं शर्मा, कृष्णकान्त : 'भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास एवं समस्याएँ', आर0लाल बुक डिपो, मेरठ, 2009
- लेविट : ऐलिमेन्ट्स ऑफ स्टेटिस्टिक्स इन सोशल साइन्स पृ0 5, 6
- पाण्डेय, के0पी0 : 'शैक्षिक अनुसंधान', विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, संस्करण 1998
- राय, पारसनाथ : ''अनुसंधान परिचय'', लक्ष्मी नारायण अग्रवाल पब्लिशर्स, संस्करण– टप्प्ए आगरा, 1973
- सारस्वत, मालती : 'शिक्षा मनोविज्ञान की रूपरेखा', आलोक प्रकाशन, इलाहाबाद 2000
- बेस्ट, जॉन डब्ल्यू0 : ''रिसर्च एन एज्यूकेशन', प्रिन्टर्स हॉल, न्यूयार्क
- गैरेट, हेनरी ई0 : 'शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग', कल्याणी पब्लिशर्स', नई दिल्ली, संस्करण 11, 1989
- हैकमेन : 'प्रासपैक्टिव्स ऑन बिहेवियर इन ऑर्गनाइजेशन', मैक्ग्राहिल बुक कम्पनी, न्यूयार्क 1977
- हिलगार्ड, पी0 : 'इम्प्रूविंग सोशल लर्निंग इन द एलीमैन्ट्री स्कूल', टीचर्स कॉलेज, न्यूयार्क, 1954
- कपिल, एच0के0 : 'सांख्यिकी के मूल तत्व', विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा 1992
- कक्कड़, एस0बी0 व भार्गव, महेश : 'करंट इश्यूज इन एजूकेशन एण्ड साइकोलोजी', आगरा : एच0पी0 भार्गव बुक हाउस, संस्करण–आगरा 2003